









मीभम्हा-मुद्ध-मुद्धा-रुगवञ्चम्-पाभागाउ-भुलाभुग्व-मुत्रःस्न पी०भा मी-काष्ट्वी-काभकेष्टि-पी०भा एगम्हुरु-मी-मुद्धारणाट-भ्वाभि-मीभ०-मंभुग्नभा

॥नगमिन-एवर्ग-ए५-५५ वलभा॥

Announcement regarding japam/parayanam to be done on Narasimha Jayanti as directed by His Holiness Pujya Shree Kanchi Kamakoti Peetadhipati Shri Shankara Vijayendra Saraswathi Shankaracharya Swamigal.

For Vedic scholars, adhyapakas and vidyarthis:

- 1) After completing snanam, sandhyavandanam and other nitya karmanushthanam before 7 am on that day, the Narasimha Gayatri should be chanted 108 times.
- 2) The Narasimha Mahamantram "ugram veeram" should be chanted 1008 times.
- 3) This should be done before food. Senior citizens and children can take liquid food (buttermilk, kanji) without salt.

Others/women should do parayanam of Shri Narasimha Karunarasa (Karavalamba) Stotram by Shri Shankara Bhagavatpada three times in the evening on that day.

रुर रुर मद्भर एव एव एव मद्भर

Please do the mantra japam with sankalpam as given below and the stotra parayanam and receive the Grace of Guru and Lord Lakshmi Narasimha.

भद्रलुः

भभेपाउमभम्दिविद्यस्य मीपामिष्य पीट्रां मुरु मेरुन भूरुन महित्र मुद्रायपान मिस्रायपान मिस्रायपान मिस्रायपान मिस्रायपान मिस्रायपान मिस्रायपान मित्र प्रमाय मिस्रायपान मिर्ग मिरुटियो रागवेड नामिर्ग प्रमायन मिस्रायपान मिस्रायपान मिस्रायपान मिस्रायपान मिस्रायपान मिस्रायपान मिरुटियो रागवेड नामिरियपान मिस्रायपान मिस्रायपान मिर्ग मिरुटियो रागवेड नामिरियपान मिस्रायपान मिस्रायपान मिर्ग मिरुटियो रागवेड नामिरियपान मिरुटियो रागवेड नामिरियपान मिर्ग मिरुटियो रागवेड नामिरियपान मिरुटियो रागवेड नामिरियपान मिरुटिया मिरुटियो रागवेड नामिरियपान मिरुटियो रागवेड नामिरियपान मिरुटियो रागवेड मिरियपान मिरुटियो रागवेड मिरुटियो सिर्ग मिरुटियो रागवेड मिरुटियो रागवेड मिरुटियो रागवेड मिरुटियो सिर्ग मिरुटियो सिर्य म

- ० मापपः राउँ मनु३ रा भनाउन-एम्- मवल भिनां भ्राका-भिम्ने य
- ० विमिधः उद्गा-रब्ल उद्गुरानाभा मणिकारिल मैनिकानाभा मनुधा छ उद्गुर-मपिबिउ-मुम्न-भाभुरु-चैद-विम्वाम-पृक्ष्य
- ० मणिकारितं म्म-रब् १९ मुनुर-मुनुरुलुमु मिसूच
- o प्रमाविगेषिनं प्राउः उञ्चारण्य, उउ-पेञ्चलकानं प्रिवन्नाय, उधं भविधं प्रिवाराय, उधं भविधं प्रिवाराय, प्राविधाराय, प्राविधार, प्राविधाराय, प्राविधाराय, प्राविधाराय, प्राविधाराय, प्राविधार, प्रावि
- ० एम्-विरेण-वमाम्स् वृपाम्धियानं स्पीवानं भम्स्-गिठ-प्रथ्वे, उम्स्-बन्ननं भनः-मानुव
- ० एर्मविरेण-पीठिउँ प्रमिष् मीण्मेव भ्रक्-पृत्रक-मानु-भ्राष्टाविक-भि्उः प्रागमनाय
- ० एन नं ए भिकउया भने पे ए एविनम् भिम्ने व

नरमिन-गायरुः महेरुरमउ-मह्या नरमिन-भर्गाएम् ए महेरुरमन्न-मह्या एपं किरिमृ।

रुर रुर मद्भर

॥म्ी-न् भिंफ-गण्यद्री॥

र्षं वस्तापाय विम्मक डीकूमंभ्य णीभिक। उत्ते नारभिकः प्रोम्याडा॥

॥मी-न भिष्ठ-भष्णभनुः॥

ममृ मी-नर मिंक-भका भव्मृ नारम एषिः, मन्धूपि छन्ः, न मिंके मिवउ। मी-न मिंक-प्भाम-भिष्टुर्रे एपे विनिधेगः॥

> उग् वीरं भकाविष्कं स्वतं भवंडेभापभा। न भिंकं घीषणं घर्र भुद्वभुद्वं नभाभूकभा॥

काचिन वाग्रा भनमिति चैंचा इम्हिणु उद्भाग वा प्तुः भुष्टावादी। करीभ बम्द्रा भकलं परम् नारावण्येदि भभरावाभि॥



॥लक्ती-न भिंठ-करुण्यम-भुँउभा॥

म् भड़ा-पंचेतिण-तिकउत्र ग्रक्षणण रेगीत्-रेग-भण्य-गण्यः -पृष्य-भृतः । वेगीम माम्रुड मर्थः ठवाब्न-पेउ लक्ती-त् मिरु भभ मिरु करावलभूभाण।

र्क्निन्-रुद्-भरुद्ध-किरीए-केए-मद्धास्ट्रिट द्धि-कभलाभल-कान्ति-कान्। लक्की-लभर्ग-कुग्य-भर्गे रुठ-राष्ट्रंभ लक्की-न् भिरु भभद्दिक करावलभूभा॥॥

भंभार-म्य न-म्लाकर-छी-करें ह-द्वलावली छिर डिम्पू-उन्नह्नम् । इड्रा-पाम-पम्मभरभी मरल्लगउम् लक्ती-न् भिंक भभ में कि करावल भूभी॥॥॥

मंभार-एल-पिउरम् एग निवाम भन्ने निवाद्ग-गितमाग्-प्रधेपभम् । पेक्कित्र-प्रार-उल्क-भम्कम् लक्ती-निर्मेष्ठ भभ मिलिक करावल भूभो॥म॥

मंभार-कुपभित्रभेरभगाण-भुलं मभाप द्वाप-मउ-भर्त-मभाक्तम्। द्वीतम् द्विक्पया पद्दभागउम् लक्ती-तृ मिंक भभ द्विक करावलभूभा॥॥

मंभार-डीकर-करीत्-कराहिआउ-निषीहुभात-वप्षः मकलात्रि-ताम। प्राप्य-प्याप्य-ठव-डीडि-मभात्तलमृ लक्ती-तृमिंछ भभ म्हिक करावलभूभा॥॥॥

मंभार-भर्-विध-िय्ग-भर्तेग्-डीव्-द्रंभ्ग्-केए-परिद्यम्-विनम्-भृरः । नागारि-वाठन भृणाष्ट्र-निवाम मेरि लक्ती-न् भिंठ भभ द्रोठि करावलभूभा॥॥ मंभार-त्वभभ-ग्रीस्भनतु-कर्म-मापा-वृडं कर्ण-पर्भनङ्ग-५५भा। गुरुष्ट म्शप-द्रलिउं पर्डे म्याले लङ्गी-न् भिष्ठ भभ म्लि करावलभूभा॥ऽ॥

भंभार-भागर-विमाल-कर्गल-काल-नक्-ग्र-ग्भिउ-निग्र-विग्रम् । वृग्म् राग-निग्रवेग्नि-निपीिष्ठउम् लक्ती-न्भिरु भभ मिर्क करावलभूभा॥७॥

मंभार-भागर-निभक्त-भृष्टभानभा द्वीनं विलेक्य विषेक्षण्य-निण्ने भाभा। प्राद्ध-पिद्ध-पिर्वाण्य-परावडार लक्ती-नु मिंक भभ द्विक्व करावलभ्रभा॥०॥

भंभार-भेर-गरुन गरंड भ्राम भारेग्-छीकर-भग-प्यामिडम् मुत्रम् भक्कर-निम्म् भ्रम् पिडम् लक्की-न् भिरु भभम्हि करा बल्वभूभा॥००॥

वसू गल यभ-रुए वक उत्त्यमः कर्ति यइ रुव-पाम-मर्डेग्-युउं भाभा। एक किनं प्रवमं एकिउं एयाले लक्ती-नुमिक भभ एकि क्रावलभूभा॥०९॥

लक्गी परं कभल गरु भ्रम विभू व्राप्त व्याप्त व

एकन ग्रम्भपरण करण मह्मभा मन्न भित्र-उनयाभा मवलभू उिश्वना। वाभेउरण वरमाध्य-पम्मग्रिकं लक्षी-न भिर्क भभ मिल करावलभूभा॥०म॥ रुर रुर मद्भर एव एव एव मद्भर

मन्नम् म रूउ-विवेक-भठा एनम् एउँगा-भठाव लिहिपिन् व-नाभएँ वैः। भेठा त्रका र-कुठाँ विनिधा दिउम् लक्षी-नुसिठ भभ ह्रिक करावल प्रभा॥०५॥

प्राम्पाद्य-परामर-प्राप्तीक-वृत्तमाद्य-रागवउ-प्राव-रुद्धिवाम । रुज्ञान्यज्ञ-परिपालन-पारिष्यउ लक्षी-न् मिरु भभ मेरिंड करावलभ्रमा॥०॥

लक्ती-न् भिंक-ग्राण्युक्त-भएव्डेन भेंड्रं न्डं मुरुकां रुवि मद्गाणा च उडा ५० नि भन्न क्रि-रुक्ति-च्काः डे चानि उडा-पप्त-मार्गणभापार-ग्रुपभाणाः ॥ ७ डि मीभम्बद्भार-रुगवश्चाद्य-विराग्डिं मी-लक्ती-न् भिंक-क्रण्णाम-भेंड्रं मभुक्रभा॥

